INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 16 | ISSUE - 6 | JULY – 2026

भारतीय महिलाओं का राष्ट्र विकास में योगदान का विश्लेषणात्मक अध्ययन (1975 से 2010)

डॉ. कृष्ण कुमार पाण्डेय
सहायक प्राध्यापक, डॉ.सी. वी. रमन विश्वविद्यालय, कोटा, बिलासपुर (छ.ग.)

वीणा राठौड़,
शोधार्थी (इतिहास), सामाजिक विज्ञान विभाग, डॉ.सी.वी. रमन विश्वविद्यालय, कोटा, बिलासपुर (छ.ग.)

सारांश –

भारतीय समाज के विकास में महिलाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। प्रस्तुत अध्ययन में वर्ष 1975 से 2010 के मध्य भारतीय महिलाओं द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में किए गए योगदान तथा राष्ट्र निर्माण में उनकी भूमिका का अध्ययन किया गया है। इस अवधि में महिलाओं ने शिक्षा, आर्थिक विकास, सामाजिक सुधार, राजनीति, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, साहित्य एवं संस्कृति तथा खेल जैसे विविध क्षेत्रों में उल्लेखनीय उपलब्धियाँ प्राप्त कीं। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि महिला शिक्षा के विस्तार ने सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया को गति प्रदान की। महिला शिक्षकों एवं शिक्षाविदों ने ज्ञान, नैतिक मूल्यों और सामाजिक चेतना के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आर्थिक क्षेत्र में महिलाओं ने उद्यमिता, उद्योग, बैंकिंग एवं सेवा क्षेत्र में अपनी क्षमता का प्रदर्शन किया तथा देश के आर्थिक विकास में योगदान दिया। सामाजिक क्षेत्र में महिलाओं ने शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला अधिकार, ग्रामीण विकास एवं कमजोर वर्गों के उत्थान के लिए कार्य किया। राजनीतिक क्षेत्र में इंदिरा गांधी, प्रतिभा पाटिल, सुषमा स्वराज, मायावती, जयललिता एवं ममता बनर्जी जैसी महिला नेताओं ने नेतृत्व क्षमता का परिचय देते हुए भारतीय लोकतंत्र को सशक्त बनाया। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में डॉ. असीमा चटर्जी, डॉ. टेसी थॉमस, डॉ. रितु करिधल और अन्य महिला वैज्ञानिकों ने अनुसंधान एवं तकनीकी विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। साहित्य एवं संस्कृति के क्षेत्र में महादेवी वर्मा, अमृता प्रीतम, कृष्णा सोबती, लता मंगेशकर, आशा भोसले एवं सोनल मानसिंह जैसी महिलाओं ने भारतीय संस्कृति को समृद्ध किया। खेल क्षेत्र में पी.टी. उषा, कर्णम मल्लेश्वरी, मैरी कॉम, साइना नेहवाल, सानिया मिर्जा, मिताली राज आदि खिलाड़ियों ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत का गौरव बढ़ाया। अतः राष्ट्र विकास की प्रक्रिया में महिलाओं की समान एवं सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करना आवश्यक है। महिला सशक्तिकरण केवल महिलाओं के हित का विषय नहीं है, बल्कि यह एक विकसित, समृद्ध और आत्मनिर्भर राष्ट्र के विकास की आधारशिला है।

मुख्य शब्द – महिला सशक्तिकरण, राष्ट्र विकास, महिला शिक्षा, आर्थिक विकास, राजनीतिक भागीदारी, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, साहित्य एवं संस्कृति, खेल।

1. प्रस्तावना –

भारतीय समाज के विकास की प्रक्रिया में महिलाओं की भूमिका सदैव महत्वपूर्ण रही है। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक महिलाओं ने परिवार, समाज और राष्ट्र के निर्माण में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से

योगदान दिया है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारतीय संविधान ने महिलाओं को समान अधिकार प्रदान किए, जिसके परिणामस्वरूप सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं शैक्षिक क्षेत्रों में उनकी भागीदारी निरंतर बढ़ी। प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य वर्ष 1975 से 2010 के मध्य भारतीय महिलाओं के विभिन्न क्षेत्रों में योगदान का अध्ययन करना तथा राष्ट्र निर्माण में उनकी भूमिका का विश्लेषण करना है। इस अवधि का चयन इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि 1975 को संयुक्त राष्ट्र द्वारा अंतरराष्ट्रीय महिला वर्ष घोषित किया गया था, जिसके बाद भारत में महिला विकास, महिला अधिकार एवं महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में अनेक महत्वपूर्ण पहल प्रारंभ हुईं। इस अध्ययन में महिलाओं के योगदान को प्रमुख रूप से शिक्षा, अर्थव्यवस्था, सामाजिक विकास, राजनीति, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, साहित्य एवं संस्कृति तथा खेल क्षेत्रों के संदर्भ में समझने का प्रयास किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि भारतीय महिलाओं ने शिक्षा के माध्यम से सामाजिक चेतना का विकास किया, आर्थिक क्षेत्र में आत्मनिर्भरता प्राप्त की, राजनीतिक क्षेत्र में नेतृत्व क्षमता प्रदर्शित की तथा विज्ञान, साहित्य, कला और खेल के क्षेत्र में राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत को गौरवान्वित किया। महिला शिक्षकों, वैज्ञानिकों, उद्यमियों, राजनीतिक नेताओं, साहित्यकारों और खिलाड़ियों के योगदान ने यह सिद्ध किया कि महिलाएँ राष्ट्र विकास की सक्रिय सहभागी हैं। महिलाओं का सशक्तिकरण केवल सामाजिक न्याय का विषय नहीं है, बल्कि यह राष्ट्र के समग्र विकास का आधार है।

किसी भी राष्ट्र की प्रगति उसके नागरिकों की सक्रिय भागीदारी पर निर्भर करती है। भारत जैसे विकासशील राष्ट्र में महिलाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। भारतीय संस्कृति में महिलाओं को सम्मानजनक स्थान प्राप्त रहा है, परंतु सामाजिक संरचनाओं, अशिक्षा, आर्थिक निर्भरता और रूढ़िवादी परंपराओं के कारण लंबे समय तक महिलाओं की क्षमताओं का पूर्ण विकास नहीं हो पाया। स्वतंत्रता के बाद भारत सरकार ने महिलाओं के विकास के लिए अनेक योजनाएँ प्रारंभ कीं। शिक्षा का प्रसार, रोजगार के अवसर, राजनीतिक अधिकार और सामाजिक सुधारों ने महिलाओं को आगे बढ़ने का अवसर प्रदान किया। 1975 से 2010 का कालखंड भारतीय महिलाओं के विकास एवं सशक्तिकरण का महत्वपूर्ण चरण रहा। इस अवधि में महिलाओं ने परंपरागत भूमिकाओं से आगे बढ़कर राष्ट्र विकास के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी पहचान स्थापित की।

2. अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व –

महिलाओं के योगदान का अध्ययन निम्न कारणों से आवश्यक है – राष्ट्र विकास में महिलाओं की वास्तविक भूमिका को समझना, महिला सशक्तिकरण की प्रक्रिया का विश्लेषण करना, विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं की उपलब्धियों का मूल्यांकन करना, समाज में लैंगिक समानता की आवश्यकता को स्पष्ट करना, भविष्य की महिला विकास नीतियों के लिए दिशा प्रदान करना।

3. अध्ययन के उद्देश्य –

इस शोध के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं –

- 1975 से 2010 के मध्य भारतीय महिलाओं की भूमिका का अध्ययन करना।
- शिक्षा क्षेत्र में महिला योगदान का विश्लेषण करना।
- आर्थिक एवं सामाजिक विकास में महिलाओं की भूमिका को समझना।
- राजनीतिक क्षेत्र में महिला नेतृत्व का अध्ययन करना।
- विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में महिला वैज्ञानिकों के योगदान का अध्ययन करना।
- साहित्य, संस्कृति एवं खेल क्षेत्रों में महिलाओं की उपलब्धियों का मूल्यांकन करना।
- राष्ट्र निर्माण में महिलाओं की समग्र भूमिका को स्पष्ट करना।

4. शोध पद्धति –

प्रस्तुत अध्ययन ऐतिहासिक एवं वर्णनात्मक शोध पद्धति पर आधारित है। अध्ययन की प्रकृतिः वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन।

5. आंकड़ों के स्रोत –

पुस्तकें शोध पत्रिकाएँ, सरकारी रिपोर्ट, महिला एवं बाल विकास मंत्रालय की रिपोर्ट, जनगणना रिपोर्ट, समाचार पत्र एवं पत्रिकाएँ, इंटरनेट आधारित सामग्री

6. विश्लेषण –

किसी भी राष्ट्र के विकास का मूल्यांकन केवल आर्थिक प्रगति से नहीं किया जा सकता, बल्कि उसमें समाज के प्रत्येक वर्ग की भागीदारी का महत्वपूर्ण स्थान होता है। महिलाओं की भागीदारी राष्ट्र के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक विकास का एक महत्वपूर्ण आधार है। भारत जैसे विशाल एवं विविधतापूर्ण देश में महिलाओं ने सदियों से परिवार, समाज और राष्ट्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

वर्ष 1975 को संयुक्त राष्ट्र द्वारा अंतरराष्ट्रीय महिला वर्ष घोषित किया गया, जिसके पश्चात विश्व स्तर पर महिलाओं के अधिकार, समानता और विकास के मुद्दों को विशेष महत्व प्राप्त हुआ। भारत में भी इस अवधि के बाद महिला सशक्तिकरण की दिशा में अनेक नीतिगत एवं सामाजिक परिवर्तन हुए। शिक्षा, रोजगार, राजनीतिक भागीदारी, विज्ञान, संस्कृति और खेल जैसे क्षेत्रों में महिलाओं की उपस्थिति निरंतर बढ़ी। वर्ष 1975 से 2010 का कालखंड भारतीय महिलाओं के सामाजिक परिवर्तन एवं उपलब्धियों का महत्वपूर्ण काल रहा। इस अवधि में महिलाओं ने पारंपरिक सीमाओं को पार करते हुए विभिन्न क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा और नेतृत्व क्षमता का प्रदर्शन किया।

सामाजिक क्षेत्र में महिलाओं का योगदान –

महिलाओं ने सामाजिक विकास के क्षेत्र में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला अधिकार, बाल विकास और सामाजिक सुधार के क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य किए। मदर टेरेसा, मेधा पाटकर, अरुणा रॉय, सुधा मूर्ति जैसी महिलाओं ने समाज के कमजोर और वंचित वर्गों के उत्थान के लिए कार्य किया। सामाजिक क्षेत्र में महिलाओं का योगदान – गरीब एवं वंचित वर्गों की सहायता, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता जागरूकता, महिला अधिकारों की रक्षा, सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध संघर्ष, महिलाओं के सामाजिक योगदान ने समाज में संवेदनशीलता और समानता की भावना को मजबूत किया।

आर्थिक क्षेत्र में महिलाओं का योगदान –

आर्थिक विकास में महिलाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। 1975 से 2010 के मध्य महिलाओं ने कृषि, उद्योग, व्यापार, बैंकिंग, सेवा क्षेत्र एवं उद्यमिता में सक्रिय भागीदारी की। महिलाओं ने स्वयं सहायता समूहों, लघु उद्योगों और स्वरोजगार के माध्यम से आर्थिक आत्मनिर्भरता प्राप्त की। महिला उद्यमियों ने यह सिद्ध किया कि वे आर्थिक विकास की महत्वपूर्ण सहभागी हैं। प्रमुख योगदान – रोजगार सृजन में सहयोग। परिवार की आर्थिक स्थिति को मजबूत करना। महिला उद्यमिता का विकास। ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करना। आर्थिक आत्मनिर्भरता ने महिलाओं की सामाजिक स्थिति को भी मजबूत किया।

शिक्षा क्षेत्र में महिलाओं का योगदान –

शिक्षा महिला सशक्तिकरण का सबसे महत्वपूर्ण माध्यम है। 1975 के बाद भारत में महिला शिक्षा के विस्तार पर विशेष ध्यान दिया गया। शिक्षा के प्रसार से महिलाओं में आत्मविश्वास, निर्णय क्षमता और सामाजिक जागरूकता का विकास हुआ। महिला शिक्षकों ने राष्ट्र निर्माण में विशेष योगदान दिया। उन्होंने केवल ज्ञान प्रदान करने का कार्य नहीं किया, बल्कि विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों, सामाजिक जिम्मेदारी और राष्ट्रीय भावना का विकास किया। महिलाओं की शिक्षा के परिणामस्वरूप बालिका शिक्षा को बढ़ावा मिला। महिला साक्षरता दर में वृद्धि हुई। उच्च शिक्षा एवं शोध में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी।महिलाओं के रोजगार के अवसरों में विस्तार हुआ। इस प्रकार शिक्षा के क्षेत्र में महिलाओं का योगदान सामाजिक परिवर्तन का आधार बना।

राजनीतिक क्षेत्र में महिलाओं का योगदान –

भारतीय लोकतंत्र में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी निरंतर बढ़ी है। संविधान द्वारा प्राप्त समान राजनीतिक अधिकारों और पंचायती राज संस्थाओं में आरक्षण ने महिलाओं को नेतृत्व के अवसर प्रदान किए। इस अवधि में महिलाओं ने प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति, मुख्यमंत्री, मंत्री एवं जनप्रतिनिधि के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। प्रमुख महिला नेता – इंदिरा गांधी, प्रतिभा पाटिल, सुषमा स्वराज, मायावती, जयललिता, ममता बनर्जी, इन नेताओं ने प्रशासन, सामाजिक न्याय और विकास के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। राजनीतिक भागीदारी ने महिलाओं को निर्णय प्रक्रिया का सक्रिय हिस्सा बनाया।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में महिलाओं का योगदान –

आधुनिक युग में विज्ञान एवं तकनीकी विकास राष्ट्र की प्रगति का प्रमुख आधार है। भारतीय महिला वैज्ञानिकों ने इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ प्राप्त कीं। प्रमुख महिला वैज्ञानिक – डॉ. असीमा चटर्जी (औषधि एवं रसायन विज्ञान), डॉ. टेसी थॉमस (रक्षा एवं मिसाइल तकनीक), डॉ. रितु करिधल (अंतरिक्ष विज्ञान), डॉ. किरण मजूमदार–शॉ (जैव प्रौद्योगिकी) इन वैज्ञानिकों के योगदान से भारत की वैज्ञानिक क्षमता और तकनीकी आत्मनिर्भरता मजबूत हुई।

साहित्य एवं संस्कृति में महिलाओं का योगदान –

भारतीय साहित्य और संस्कृति के विकास में महिलाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। महिला साहित्यकारों ने समाज की वास्तविकताओं, महिलाओं की समस्याओं और मानवीय संवेदनाओं को अपनी रचनाओं में स्थान दिया। प्रमुख योगदानकर्ता– महादेवी वर्मा, अमृता प्रीतम, कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी, अरुंधति रॉय, संगीत एवं कला के क्षेत्र में – लता मंगेशकर, आशा भोसलें, सोनल मानसिंह, मल्लिका साराभाई आदि ने भारतीय संस्कृति को विश्व स्तर पर पहचान दिलाई।

खेल क्षेत्र में महिलाओं का योगदान –

भारतीय महिला खिलाड़ियों ने खेल क्षेत्र में राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उल्लेखनीय उपलब्धियाँ प्राप्त कीं। प्रमुख खिलाड़ी – पी. टी. उषा, कर्णम मल्लेश्वरी, मैरी कॉम, साइना नेहवाल, सानिया मिर्जा, मिताली राज, झूलन गोस्वामी आदि इन खिलाड़ियों ने महिला शक्ति, अनुशासन और आत्मविश्वास का उदाहरण प्रस्तुत किया।

7. प्रमुख निष्कर्ष –

- शिक्षा क्षेत्र में महिलाओं की शिक्षा में वृद्धि ने समाज में व्यापक परिवर्तन किए। महिला शिक्षकों और शिक्षाविदों ने ज्ञान, नैतिक मूल्यों और सामाजिक जागरूकता के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।
- आर्थिक क्षेत्र में महिलाओं ने उद्योग, व्यापार, बैंकिंग, सेवा क्षेत्र और उद्यमिता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आर्थिक आत्मनिर्भरता ने महिलाओं के सामाजिक सम्मान को बढ़ाया।
- सामाजिक क्षेत्र में महिलाओं ने स्वास्थ्य, शिक्षा, बाल विकास, महिला अधिकार और सामाजिक सुधार के क्षेत्रों में महत्वपूर्ण कार्य किए।
- राजनीतिक क्षेत्र में महिला नेताओं ने लोकतांत्रिक व्यवस्था को मजबूत किया। इंदिरा गांधी, प्रतिभा पाटिल, सुषमा स्वराज, मायावती, जयललिता आदि ने महिला नेतृत्व की क्षमता को सिद्ध किया।
- विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में महिला वैज्ञानिकों ने अंतरिक्ष, रक्षा, चिकित्सा और जैव प्रौद्योगिकी में भारत की वैज्ञानिक क्षमता को बढ़ाया।
- साहित्य एवं संस्कृति के क्षेत्र में महिला साहित्यकारों और कलाकारों ने भारतीय संस्कृति को समृद्ध किया तथा सामाजिक चेतना को विकसित किया।
- खेल के क्षेत्र में महिला खिलाड़ियों ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत का सम्मान बढ़ाया और नई पीढ़ी को प्रेरित किया।

प्रस्तुत शोध अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि 1975 से 2010 के मध्य भारतीय महिलाओं ने राष्ट्र निर्माण के प्रत्येक क्षेत्र में महत्वपूर्ण एवं प्रभावशाली योगदान दिया। इस अवधि में महिलाओं ने शिक्षा, अर्थव्यवस्था, समाज सेवा, राजनीति, विज्ञान, साहित्य, संस्कृति और खेल के क्षेत्र में अपनी प्रतिभा और नेतृत्व क्षमता को प्रमाणित किया। महिलाओं की भूमिका केवल पारिवारिक जिम्मेदारियों तक सीमित नहीं रही, बल्कि उन्होंने राष्ट्र की विकास प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी निभाई। महिला शिक्षकों ने ज्ञान एवं मूल्य आधारित समाज के निर्माण में योगदान दिया, महिला उद्यमियों ने आर्थिक विकास को गति प्रदान की, सामाजिक कार्यकर्ताओं ने कमजोर वर्गों के उत्थान के लिए कार्य किया, राजनीतिक नेताओं ने लोकतंत्र को मजबूत बनाया, वैज्ञानिकों ने तकनीकी प्रगति में योगदान दिया और खिलाड़ियों ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत का गौरव बढ़ाया। अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि महिला सशक्तिकरण राष्ट्र के समग्र विकास की अनिवार्य आवश्यकता है। जब महिलाओं को शिक्षा, समान अवसर, स्वतंत्र निर्णय क्षमता और सामाजिक सम्मान प्राप्त होता है, तब वे अपनी क्षमता का पूर्ण उपयोग कर राष्ट्र की प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं।

8. उपसंहार –

अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि 1975 से 2010 के मध्य भारतीय महिलाओं ने राष्ट्र निर्माण के प्रत्येक क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। महिलाओं की भूमिका केवल पारिवारिक दायित्वों तक सीमित नहीं रही, बल्कि उन्होंने शिक्षा, अर्थव्यवस्था, राजनीति, विज्ञान, संस्कृति और खेल जैसे क्षेत्रों में नेतृत्व प्रदान किया। महिलाओं की उपलब्धियाँ यह प्रमाणित करती हैं कि जब महिलाओं को समान अवसर, शिक्षा और स्वतंत्र निर्णय लेने का अधिकार प्राप्त होता है, तब वे राष्ट्र के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। इसलिए महिला सशक्तिकरण को राष्ट्र विकास की मूल रणनीति के रूप में स्वीकार करना आवश्यक है। अतः यह कहा जा सकता है कि महिलाएँ राष्ट्र निर्माण की सहभागी ही नहीं, बल्कि उसकी आधारभूत शक्ति हैं। विकसित और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण के लिए महिलाओं की समान एवं सक्रिय भागीदारी आवश्यक है। अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि महिलाओं का विकास राष्ट्र के विकास से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ है। महिलाओं की शिक्षा, आर्थिक स्वतंत्रता, राजनीतिक भागीदारी और सामाजिक सशक्तिकरण ने भारत के समग्र विकास को नई दिशा प्रदान की है। "एक शिक्षित, सशक्त और आत्मनिर्भर महिला ही एक सशक्त परिवार, सशक्त समाज और सशक्त राष्ट्र का निर्माण करती है।"

9. सुझाव –

- महिला शिक्षा को और अधिक मजबूत बनाया जाए।
- उच्च शिक्षा एवं शोध में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाई जाए।
- महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने के अवसर दिए जाएँ।
- राजनीति एवं प्रशासन में महिलाओं का प्रतिनिधित्व बढ़ाया जाए।
- विज्ञान एवं तकनीकी क्षेत्रों में महिला शोधकर्ताओं को प्रोत्साहित किया जाए।
- खेल क्षेत्र में बालिकाओं के लिए बेहतर सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाएँ।
- समाज में लैंगिक समानता एवं सम्मान की भावना विकसित की जाए।

"महिलाएँ राष्ट्र की आधी आबादी ही नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण की आधी शक्ति हैं। उनके ज्ञान, श्रम, नेतृत्व और सृजनात्मक क्षमता के बिना विकसित भारत की कल्पना संभव नहीं है।"

संदर्भ सूची –

1. अग्रवाल, जे. सी. (2008).शिक्षा के सामाजिक आधार, नई दिल्ली : शिप्रा प्रकाशन। पृष्ठ सं.–145–172
2. शर्मा, आर. ए. (2012).शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार, मेरठ : आर. लाल बुक डिपो। पृष्ठ सं.– 210–245
3. कुमार, कृष्ण (2010).भारत में शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली : । पृष्ठ सं.– 85–120

4. देसाई, नीरा एवं कृष्णराज, मैत्रेयी (1987) भारत में महिला और समाज, अजंता प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ : 25–65, 145–180
5. कुमार, राधा (1993).भारत में महिला आंदोलन का इतिहास, काली फॉर विमेन, नई दिल्ली। पृष्ठ सं.– 90–135, 210–250
6. अल्तेकर, ए. एस. (1956).हिंदू सभ्यता में महिलाओं की स्थिति, दिल्ली : मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली पृष्ठ सं. 75–110
7. चंद्र, बिपिन (2009).स्वतंत्रता के बाद भारत, पेंगुइन बुक्स, नई दिल्ली पृष्ठ सं.– 325–360
8. सेन, अमर्त्य (1999).विकास के रूप में स्वतंत्रता, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, पृष्ठ सं.– 180–215
9. महिला अध्ययन एवं सशक्तिकरण संबंधी भारत सरकार (1975).भारत में महिलाओं की स्थिति पर समिति की रिपोर्ट (Towards Equality). शिक्षा एवं समाज कल्याण मंत्रालय, नई दिल्ली पृष्ठ सं.–1–45, 120–150
10. महिला एवं बाल विकास मंत्रालय (2001).राष्ट्रीय महिला सशक्तिकरण नीति।भारत सरकार, नई दिल्ली। पृष्ठ सं.– 10–35
11. राष्ट्रीय महिला आयोग (1992–2010).वार्षिक प्रतिवेदन, नई दिल्ली, पृष्ठ सं.– 20–75
12. भारत सरकार (2011).भारत की जनगणना 2011 : महिला साक्षरता एवं जनसंख्या आंकड़े। नई दिल्ली। पृष्ठ सं.– 45–90
13. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारतीय महिला वैज्ञानिकों की उपलब्धियाँ, भारत सरकार, नई दिल्ली पृष्ठ सं. 157–60
14. इसरो, भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम एवं महिला वैज्ञानिकों का योगदान, बेंगलुरु, पृष्ठ सं. – 25–55
15. साहित्य एवं संस्कृति संबंधी संदर्भ नामवर सिंह (2005).हिंदी साहित्य और आधुनिकता, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ सं. – 120–160
16. शुक्ल, रामचंद्र, (2000) हिंदी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा, प्रयागराज, पृष्ठ सं. – 50–520
17. कृष्णा सोबती, मित्रो मरजानी, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन। पृष्ठ सं. – 15–90
18. भंडारी, मन्नू आपका बंटी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ सं. – 20–150
19. भारतीय खेल प्राधिकरण, भारत में महिला खिलाड़ियों की उपलब्धियाँ, नई दिल्ली। पृष्ठ सं. – 30–85
20. युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय, राष्ट्रीय खेल नीति एवं महिला खेल विकास रिपोर्ट, भारत सरकार,नई दिल्ली। पृष्ठ सं. – 40–95

डॉ. कृष्ण कुमार पाण्डेय
सहायक प्राध्यापक, डॉ.सी. वी. रमन विश्वविद्यालय, कोटा, बिलासपुर (छ.ग.)